तलवार और सर्प

निम्नलिखित दर्शन एल वीयर एलीयट को 1970 में दिया गया था।

इस दर्शन/प्रकाशन में मैं एक बड़े सभा–भवन (चर्च) के बीच में था और उसकी दीवारें और छत बहुमुल्य पत्थरों, आभूषणों से ढकी हुई थी और उसकी खिड़कियाँ रंग बिरगें शीशे से बनी हुई थी। वह सभा–भवन लोगों से भरा हुआ था, कुछ अमीर, कुछ गरीब, कुछ अपंग और बिमार, गूंगें और अंधे, परन्तु सभी के चेन बांधी हुई थी और हाथों में हथकड़ियाँ थी और कोई भी स्वतन्त्र नहीं था। (यह आज के चर्च की तस्वीर, वह चर्च में है परन्तु आजाद नहीं है)। उस सभा भवन के सामने एक बड़ा सा चबूतरा था जिसके एक ओर मंच था और एक ओर बड़ा सा पिंजरा जिसके अन्दर बहुत बड़ा सा सांप था और वह उसके ऊपर लटका हुआ था जहाँ पर वक्ता खड़ा होता है और वहीं एक तलवार लटकी हुई थी जिसके क्षितिज पर दोनों और तार थे' और उस मंच पर ढेर सारे सेवक थे, 8 या 10 जो पादरी की वेशभूषा में खड़े थे वे एक दूसरे के पीछे बेठे थे सभा उनकी ओर देख रहीं थी और वह सभा की ओर देख रहे थे। कुछ समय के लिए वहाँ शान्ति छा गई जबतक की एक गरजती सी आवाज मंच पर से नहीं आई, जैसे वह सीधे परमेश्वर की ओर से आई हो, कहते हुए, ''कौन परमेश्वर के समस्त मंत्रणा को घोषित करेगा?'' और सबसे पहला पादरी अपनी बाइबिल हाथ में लिए हुए उठा, और जब उसने ऐसा किया, तो वह हरे सर्प ने अपने आप को खोला और खींचते हुए चमकती आखों और बाहर निकले हुए दातों के साथ उस व्यक्ति के विरूद्ध फुकारने लगा; और उस परमेश्वर के दास ने जो की झूठा था अपनी जगह पर वापस बैठ गया और अपनी बाइबिल कुर्सी के नीचे रख दी। और उस सर्प ने अपने सिर को खींच कर तलवार छुई और उस व्यक्ति से कहा, ''अगर कोई परमेंश्वर की वाणी को मानता है तो मैं उसे इस तलवार से मार दूंगा।''

और फिर कुछ समय फिरसे सब शान्त हो गया। और फिर से वह आवाज मंच पर से गूंजी ''कौन परमेश्वर की समस्त मंत्रणा को घोषित करेगा?'' और फिर दुसरा पादरी खड़ा हुआ जैसे वह आगे बढा, और फिर से सर्प दुबारा उसके विरूद्ध खुला और वह व्यक्ति डर के मारे हड़बड़ा गया और बैठ गया और अपनी बाइबिल को कुर्सी के नीचे रख दी (वचन को छिपाना)। सर्प ने फिर से तलवार को छुआ और फिर से वही टिप्पणी की, ''मैं तुम्हें मार दूंगा अगर तुमने परमेंश्वर की वाणी को माना।''

तीसरी बार वह आवाज मंच से गूंजी और तीसरा व्यक्ति खड़ा हुआ और उन दोनों की तरह बैठ गया। और बार–बार वह आवाज मंच पर से गूंजी, हर एक सेवक को मौका मिला कि वह सर्प का सामना करें परन्तु डर उन पर हावी हुआ, जैसे उन तीनों पर हावी हुआ था। और वह सर्प अपनी दुष्ट मुस्कान के साथ मुस्कुराया।

और फिर उस आवाज ने मंच पर से फिर पुकारा और कहा, ''ओह! काश एक तो व्यक्ति होता; जो परमेश्वर की मंत्रणा को घोषित करता कि यह चेन से बन्धे लोग आजाद हो जाते! क्यो एक भी व्यक्ति नहीं है?''

फिर एक छोटी कद काठी वाला व्यक्ति (मतलब जो इस दुनिया की नजरों में कुछ भी नहीं हैं), मंच पर चढ गया और तलवार के नीचे खड़ा हो गया और अपनी आंखे उसने स्वर्ग की ओर उठायी और कहा, ''*तेरे हाथों में ओ परमेश्वर, मैं अपनी आत्मा को सौंपता हूँ*।'' तब उसने बाइबिल खोली और पढ़ने लगा। उसने कुछ भी उसमें नहीं जोड़ा और उस में से कुछ भी नहीं निकाला; उसने वचन को पढ़ा और एक ऐसे व्यक्ति के समान बोला जिसके पास अधिकार होता है।

और जब उसने समाप्त किया, तब उस बुढे सर्प ने अपने आप को तलवार तक खींचा और एक तार को काट दिया जो तलवार को पकड़े हुए थी और वह तलवार नीचे की ओर गिरी और उस व्यक्ति से चूक गई और उसके सिर के ऊपर से निकल गई, क्योकि वह व्यक्ति ''छोटी कद–काठी का था'', और उस तलवार के भार ने दुसरे तार को तोड दिया और वह तलवार झूलती हुई पीछे की ओर गई और उन सेवकों के ह्रदयों को छेद दिया जो वहां खड़े थे और दिवारों में ठोंक दिया। और वड़ी निराशा की चीख मंच से सुनाई दी। परन्तु उससे भी बढ़कर एक बड़े आनन्द का स्वर सभा से सुनाई दिया, हर व्यक्ति की चेन खुल गई और वह आजाद हो गए। (वचन के द्वारा आजाद हो गए)

जब यह दर्शन चला गया, मैंने बादलों में उद्धारकर्ता का एक और दर्शन देखा, ठीक मेरे सिर के ऊपर उसने कहा, ''मेरे पुत्र इन बातों का मतलब सुन! जो सभा–भवन तूने देखा वह एक सांसारिक चर्च है, जो धार्मिकता का रूप लिए हुए है, परन्तु सामर्थ से इन्कार करती है। वह इस संसार के आनन्द के सभी आभूषणों से ढकी हुई है और उनके सोने और चांदी का कोई अन्त नहीं है। जिन लोगों को तूने देखा, उन लोगों के लिए मैं मरा, परन्तु मेरे लोग ज्ञान की कमी से नष्ट हुए जाते है, उनके पास आंखे है परन्तु वह देख नहीं सकते है; उनके पास कान है परन्तु वह सुन नहीं सकते है। वह सचमुच में बन्धन में है और उनको आजाद जरूर करना चाहिए। जो मंच तुमने देखा जिस पर सेवक बैठे थे। वह मंच पूर्व–कल्पित धारणाएं है, जिनकी उत्पत्ति नरक के गड्ढे से है। मंच परमेंश्वर का सिंहासन है और वह सर्प वही लूसीफर है। जो तलवार तुमने देखी वह परमेंश्वर का वचन है और जिन तारों पर वह लटकर रहीं थी उसका मतलब वचन का सामर्थ जीवन दे सकता है या वचन का सामर्थ जीवन ले भी सकता है। उस छोटे कद–काठी वाले मनुष्य को जीवन मिला और उन सेवकों का जीवन ले लिया गया जो मेरे वचन का प्रचार नहीं करते है। जिन सेवकों को तूने देखा, वह हर चर्च के स्त्री पुरूष है जो मुझे जानने का नाटक करते है। परन्तु वह मेरे लोगों को उन चीजों को सिखाते है जो जीवन की पुस्तक में नहीं लिखा और उनका घमण्ड और उनके अनुमान और उनकी सांसारिक आत्मा उन्हें शैतान को मानने के लिए मजबूर करती है जो झूठा है और झूठों

का पिता है, और हर कोई सेवक कोशिश करता है कि वह दूसरे सेवक से ज्यादा सुशिक्षित हो, विस्तृत लेखन में, तर्क वितर्क में और उसके समान; परन्तु वे सिर्फ वचन के

'अक्षर' का लिहाज करते है और वचन की आत्मा को छोड़ देते है। वह दिन आएगा और बहुत नज़दीक है जब यह सब इनके समान नष्ट हो जाएगें।

इस भयानक दृश्य को समझने के बाद, प्रभु ने इन शब्दों को फिर से बोला, क्या तुम्हे *यिर्मयाह 23* की भविष्यवाणी मे मेरे शब्द याद है और साथ ही *यहेजकेल 34 की* भविष्यवाणी के शब्द। यीशु ने कहा, उसे पढ़ो।

और मैंने अपनी बाइबिल खोली और पढ़ा ''प्रभु कहता है, 'धिक्कार है शासकों को, मेरी प्रजा के चरवाहों को, जो मेरी चारागाह के भेड़ो को तितर–बितर कर रहे है (*यिर्मयाह 23:14*)। यीशु ने कहा, ''अन्त के दिनो मे तुम यह सब समझोगें। हाय, उन चरवाहों पर जो स्वंय का पेट भरता है क्या भेढों का पेट नही भरना चाहिए?(*यहेजकेल 34:02*)। तुमने निर्बल को बलवान नहीं बनाया। तुमने बीमार को स्वस्थ नही किया। तुमने घायल के घावों की मलहम–पट्टी नहीं की। तुम भटकी हुई भेड़ों को वापस नहीं लाए। जो खो गई है, उसको नहीं खोजा। किन्तु तुमने जनता पर जोर–जबददस्ती से शासन किया। *यहेजकेल 34 : 04*।

फिर उसने मुझसे कहा, यह झूठे चरवाहें किसी भी तरह से बचने न पाएगें जब तलवार इन पर गिरेगी। परन्तु मेरी भेड़ो को चेतावनी देना अवश्य है, उन्हें स्वतन्त्र होना है। और फिर से उसने कहा, क्या तुम्हे *यिर्मयाह 25* के आखिरी भाग की भविष्यवाणी में मेरे शब्द याद है? उसे पढ़ो।

और मैनें यह पढ़ा, उनके शव, जिन को प्रभु मारेगा, पृथ्वी के एक छोर से दुसरे छोर तक पड़े रहेगें। (*यिर्मयाह 25:33*)। रोओ चरवाहों, क्योकि तुम्हारे मरने का दिन आ पहुँचा है। फिर उसने मुझसे कहा, ''यह दिन जल्दी आएगें, चरवाहें रोयेगें, हाँ! वहाँ पर रोना और दांता पीसना होगा, परन्तु जब तलवार गिर जाएगी तो हमेशा के लिए बहुत देर हो चुकी होगी। जिस छोटी काठी के मनुष्य को तुमने देखा, वह हर पुरूष और स्त्री है जो अपने आपको नम्र बनाता है, और क्रूस पर मृत्यु तक आज्ञाकारी रहता है, अपना विश्वास परमेंश्वर पर रखता है और आगे बढ़कर परमेंश्वर की सारी मंत्रणा को घोषित करता है। ओह! अगर मैं ऐसा व्यक्ति ढुंढ पाऊँ, क्या तुम मुझे बता सकते हो कि ऐसा व्यक्ति कहाँ मिलेगा? ऐसे व्यक्ति के साथ मैं स्वर्ग और पृथ्वी को हिलाकर रख दूंगा। प्रभु यों कहता है।